पटियाला घराने के उस्ताद मुनव्वर अली खाँ का सांगीतिक योगदान

देविका अग्रवाल
पीएच॰डी॰ शोधार्थी
संगीत एवं ललित कला संकाय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रस्तावना

भाा्ब्दिक अर्थों में 'घराना' भाब्द वं ा या परिवार का द्योतक माना जाता है। यदि साहित्यिक अर्थ को देखा जाये तो घराना भाब्द कुल, घर, कुटुम्ब, परिवार आदि अर्थों को भी चरितार्थ करता है। अतः अन्य क्षेत्रों में इस भाब्द के अनेक अर्थ हो सकते हैं किन्तु घराने की सांगीतिक परिभाशा के रूप में यह कहा जा सकता है कि जब पीढ़ी दर पीढ़ी गायक की मनोवृत्ति, उसके गायन के ढंग में विभिन्नतायें आवाज़ के गुणधर्म, आवाज़ लगाने का तरीका आदि में विविधतायें नज़र आती हैं, तब एक घराने का उदय होता है तथा उस घराने की मुख्य वि ोशता हमे ाा कायम रहकर अन्य घरानों से पृथक करती है।

संगीत के मुख्य घरानों में पटियाला घराने का नाम प्रतिश्ठित रूप से लिया जाता है। इस घराने की परम्परा लगभग 1880–1900 के मध्य प्रका ा में आई। पटियाला रियासत के भाासक महाराजा नरेन्द्र सिंह के दरबारी गायक तानरस खाँ को पटियाला घराने का प्रवर्तक माना जाता है, उन्हीं से आलिया–फत्तू (अली बक ा व फतेह अली) को संगीत शिक्षा प्राप्त हुई। इनके प चात् महत्वपूर्ण कलाकारों में उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ का नाम अव य लिया जाता है। इन्हीं के पुत्र उस्ताद मुनव्वर अली खाँ थे, जिन्होंने ना केवल भाास्त्रीय संगीत अपितु उप ाास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में भी अमूल्य योगदान दिया।

कार्यक्षेत्र

उस्ताद मुनव्वर अली खाँ का जन्म 15 अगस्त 1930, लाहौर (पंजाब) में हुआ। ये कसूर पटियाला घराने के भाास्त्रीय एवं उप ाास्त्रीय गायक थे तथा उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ के छोटे पुत्र थे।[1] इन्हें अपने पिता एवं ताऊजी बरकत अली खाँ से संगीत ि ाक्षा प्राप्त हुई। इन्होंने 1961 से ही अपने पिता के साथ मंच प्रद ान करने भाुरू कर दिये थे।[2,3]

खयालों की कलापूर्ण बंदि ा, अलंकारिक, वक्र और फिरत तानों का प्रयोग, खयाल के साथ पंजाब अंग की ठुमरी गाने में निपुणता, गले की तैयारी इस घराने की गायकी की वि ोशता रही हैं, जिन्हें मुनव्वर अली खाँ जी ने बखूबी प्रद ि ात किया है। इन्होंने अनेक खयाल एवं ठुमरियाँ निर्मित कीं तथा कई ऐसे रागों का भी गायन किया, जो पटियाला घराने में प्रचलित नहीं थे। उस्ताद मुनव्वर अली खाँ के सांगीतिक योगदान पर भाोध करने हेतु निम्नलिखित भाोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया–

प्रविधि–

इस भाोध के अंतर्गत ऐतिहासिक, वि लेशणात्मक एवं व्याख्यात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

जाँच परिणाम–

जाँच के दौरान मुनव्वर अली खाँ जी के बारे में पता चला कि वे 'ऑल इण्डिया रेडियो' के उच्च श्रेणी के कलाकार थे। उन्होंने दे ा–विदे ा में अनेक संगीत कार्यक्रम प्रद ि ात किये। विदे ाों में वे जर्मनी, स्विट्जरलैंड, यू.के., फ्रांस तथा आस्ट्रेलिया गये। सन् 1986 में उन्होंने अफगानिस्तान में तथा सन् 1984 में पाकिस्तान में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

एक साक्षात्कार के दौरान मुनव्वर अली जी से 'घराने' की अहमियत के बारे में पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया कि 'घराना' भाब्द तब ही अस्तित्व में आता है, जब कम से कम तीन पीढ़ियाँ एक ही प्रकार की गायिकी के ढंग को अपनाये। यदि कोई एक ही भाख्स किसी ढंग को गाकर चला गया और उसका अनुसरण करने वाला कोई और है ही नहीं तो ऐसे में घराना नहीं पनपता। यदि कसूर पटियाला घराने की बात की जाये तो इसमें अनेक पीढ़ियों का समन्वय प्रद ि ात होता है।[4]

बड़े गुलाम अली जी के पोते नकी अली खाँ ने भी घराने के संदर्भ में पूछने पर यही कहा कि कसूर घराना बाबा फाज़ल पीरदाद जो अफगानिस्तान से कसूर आये थे, उनसे भाुरू हुआ। उसके प चात् पीढ़ी दर पीढ़ी ये घराना बढ़ता गया।[5]

जाँच के दौरान यह बात भी सामने आई कि मुनव्वर अली खाँ के गायन को सुनकर श्रोतागण अक्सर कहते थे कि इनकी गायकी में बड़े गुलाम अली जी के संस्कारों की खु ाबू आती है तथा इन्होंने उन्हीं के रंग को अपनाया है। जब मुनव्वर अली जी से पूछा गया कि इतने बड़े पिता के पुत्र होने का उन्हें फायदा क्या हुआ, तो उन्होंने जवाब में यही कहा कि सिर्फ इतने बड़े पिता का पुत्र होना किसी फायदे की बात नहीं

थी अपितु जब मैंने उनसे तालीम लेकर अपनी मेहनत व परिश्रम से वो मुकाम हासिल किया, जब लोग मुझमें उनकी छवि देखने लगे, तब उनके पुत्र होने का फायदा महसूस हुआ।

सन् 1961 से ही मुनव्वर अली जी ने बड़े गुलाम अली जी के साथ मंच प्रद ान किया तो अपने पिता की मृत्यु के प चात् जब वे अकेले मंच प्रद ान किया करते थे, तभी एक सवाल उनके समक्ष आया कि उन्हें इस बात का डर था कि अब लोग गुलाम अली जी से उनकी तुलना करेंगे?या इस बात के चलते उनकी गायिकी में कुछ फर्क आया?इस सवाल का उत्तर बखूबी मुनव्वर अली जी ने दिया और कहा कि ये सवाल ही बेबुनियाद है। पुत्र, पिता जैसा कभी हो ही नहीं सकता क्योंकि ये खुदा की ही आदत नहीं है कि वो एक जैसे इंसान बनाये। इसीलिये मेरी गायिकी में कोई फर्क नहीं आया अपितु मैंने श्रोताओं में ये भावना देखी कि उन्हें पिताजी के जाने का गम भी था पर मेरी गायिकी में उनकी तालीम झलकने की खु ी भी थी, जिससे मुझे जीवन भर प्रोत्साहन मिला।[6]

निश्कर्श

कसूर पटियाला घराने में आकार के ऊपर बल दिया जाता है। यहाँ मैं निश्कर्श के रूप में अपना ये मत रखना चाहूँगी कि मेरे गुरूजी पं॰ रजिन्दर सिंह, जो मुनव्वर अली जी के भागिर्द हैं, उन्होंने भी हमे ा तालीम देते वक्त आकार, सुर लगाव, आलापचारी इत्यादि पर बल दिया, जो कि मुनव्वर अली जी की गायिकी में पूर्ण रूप से सुनने को मिलता है।

अतः निश्कर्श के रूप में यह कहा जा सकता है कि पटियाला घराने का स्थान संगीत में सर्वप्रमुख है तथा इस घराने के कलाकारों एवं संगीतज्ञों द्वारा संगीत को अमूल्य देन दी गई है। मुनव्वर अली जी के प चात् नकी अली खाँ, जवाद अली जी व मज़हर अली जी इस घराने को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे है।[7]

इनके अतिरिक्त मुनव्वर अली खाँ के अन्य ि ाश्यों में पं॰ अजय चक्रवर्ती, इन्दिरा मिश्रा, संजुक्ता घोश, सज्जाद अली, कुमार मुखर्जी आदि के नाम भी सम्मान से लिये जाते हैं।[8]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Ganesh, Deepa (16 Nov. 2005). "Beat Street (Munawar Ali Khan)". The Hindu (Newspaper)
2. Knowing the Ustad (Munawar Ali Khan) The Tribune (India Newspaper), Published 16 March 2018
3. Bade Ghulam Ali Khan, The only one who could be Tansen's voice for Mughal-e-Azam, Cinestaan.com website, Published 24th April 2018
4. Ustad Munawar Ali Khan Sahib Live Interview in Punjabi, Published on "Naqi Ali Khan" You Tube page on 28th June 2010
5. Ustad Bade Ghulam Ali Khan grandson Naqi Ali Khan Live Interview, Published on "Naqi Ali Khan" You Tube page on 29 July 2013
6. Ustad Munawar Ali Khan Sahib Live Interview in Punjabi, Published on "Naqi Ali Khan" You Tube page on 28th June 2010
7. Profile of Munawar Ali Khan. The Hindu (Newspaper), updated 21st June 2013
8. "Sangeet Sabha" pays homage to Ustad Munawar Ali Khan, The Indian Express (Newspaper), Published 18 March 2018